थर्ड जेंडर के संघर्ष का प्रतिबिंब : पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा

बी आकाश राव

संपर्क : 8942846259

लैंगिक विकलांगता और उससे जुड़े सामाजिक सरोकार की समस्या को उकेरने वाला चित्रा मुद्गल का चर्चित उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा' थर्ड जेंडर पर आधारित एक विशिष्ट रचना है। इस उपन्यास का प्रकाशन वर्ष 2016 में हुआ। यह उपन्यास भारतीय समाज में किन्नरों की यथा स्थिति प्रस्तुत करने वाला एक जीवंत दस्तावेज है। चित्रा मुद्गल की साहित्यिक दृष्टि किन्नर जीवन की विडंबना और उनके सपनों को परखते हुए विनोद उर्फ बिन्नी उर्फ बिमली की कहानी को इस उपन्यास में गतिशीलता प्रदान करती हुई दिखती है। इस उपन्यास में मुद्गल ने विनोद के माध्यम से किन्नरों के सपने, परिवार से बिछुड़ने का दर्द, आत्मनिर्भर होने की चाह, समाज के प्रति सोच, लिंग पूजन व्यवस्था, समाज की बर्बरता आदि को बहुत ही बारीकी के साथ रेखांकित किया है। कथ्य और शिल्प की विशिष्टता के कारण इस उपन्यास को वर्ष 2018 का हिंदी का साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया। प्रस्तुत उपन्यास का नायक विनोद नामक एक किन्नर है। यहाँ उसे नायक कहना इसलिए भी संगत लगता है क्योंकि भले ही वह शरीर से एक किन्नर हो लेकिन उसकी आत्मा एक पुरुष की है। यही कारण है कि यह उपन्यास अब तक थर्ड जेंडर पर लिखे बाकी उपन्यासों की तुलना में अलग हो जाता है। "इस बात के लिए चित्रा मुद्गल की प्रशंसा की जा सकती है या जैनेन्द्रीय शैली में उन्हें गले लगाकर शाबाशी भी दी जा सकती है कि अपने उपन्यासों के लिए उन्होंने हर बार एक नई कथा-भूमि और उसके अपने विशिष्ट भूगोल की तलाश की है।"[1]

उपन्यास की कथा विनोद नामक एक किन्नर और उसकी माँ वंदना बेन शाह के बीच पत्र व्यवहार के इर्द-गिर्द चलती है। विनोद, जिसका जन्म मुंबई के एक संपन्न परिवार में हुआ। उसके घर में उसके बड़े भैया सिद्धार्थ और छोटा भाई मंजुल है, जिन्हें एक किन्नर के भाई होने के कारण ग्लानि का अनुभव होता है। अतः सामाजिक लोक-लाज के कारण विनोद के घर वालों द्वारा उसे एक किन्नर टोली को सौंप दिया जाता है। वे लोग उसे दिल्ली भेज देते हैं जहाँ उसे किन्नर समुदाय के साथ उनके डेरे पर रहना पड़ता है। यद्यपि विनोद बचपन से ही पढ़ाई-लिखाई में काफी तेज रहता है। वह अपने क्लास में प्रथम आता है बड़ा होकर वह गणित में पीएच.डी. करना चाहता है और प्रोफ़ेसर बनना चाहता है, परंतु उसके सारे सपने अधूरे रह जाते हैं। हमारे समाज में हर एक किन्नर का अपना एक अतीत होता है, जिसमें विनोद की तरह ही हर किसी के कई सपने होते हैं जो पूरे नहीं हो पाते हैं। विनोद का अपनी माँ का पता ढूंढ़ना किन्नर के अपने परिवार को

ना भूल पाने की व्यथा को दर्शाता है। माँ की चिट्ठी की प्रतीक्षा करना और माँ से पत्र व्यवहार के दौरान अपने बचपन की बातों को लिखना विनोद के पारिवारिक प्रेम को दर्शाता है। विनोद की माँ अर्थात् उसकी बा समाज से छिपकर परिवार वालों से छिपकर विनोद से पत्र व्यवहार जारी रखती है। विनोद भी यही चाहता है कि उसके घर वालों को यह बात पता न चले मगर हर पत्र में वह अपने घर वालों का कुशलक्षेम जरूर पूछता है। विनोद हिजड़ों की टोली में जरूर रहता है, मगर वह हिजड़ों द्वारा अपनाए गए नाचने-गाने के काम से घृणा करता है। वह मेहनत-मजदूरी करना चाहता है, आत्मनिर्भर होना चाहता है, इसके लिए वह अपनी पढ़ाई को भी जारी रखता है। विनोद का अस्तित्व, संबोधन के तीन स्तरों पर देखा जा सकता है। अपनी माँ के लिए वह उनका बिन्नी है, तो स्वयं के लिए विनोद और किन्नर डेरे के लिए बिमली। सामान्यत: किन्नरों में प्रायः आत्मा एक स्त्री की होती है मगर विनोद में पुरुष की आत्मा है। वह अपने आप को अंदर से एक पुरुष के रूप में स्वीकार करता है।

विनोद घरों और ट्रेनों में किन्नरों के साथ जाकर तालियां नहीं पीटता, वह तड़के सुबह उठकर गाड़ियों को धोने का काम करता है। यहाँ एक प्रकार से उसका शोषण भी होता है, क्योंकि दिन के उजाले में कोई भी किसी हिजड़े से अपनी कार साफ नहीं करवाना चाहता और बिचौलिया इसलिए उसे काम पर रखता है क्योंकि अन्य मजदूरों की तुलना में विनोद को उसे कम पैसे देने पड़ेंगे। विनोद जहाँ एक तरफ अपने अधिकारों के लिए सशक्त दिखाई पड़ता है तो वहीं अपने परिवार के लिए अति संवेदनशील भी है। विनोद का यह कथन "जरूरत है सोच बदलने की। संवेदनशील बनाने की। सोच बदलेगी तभी जब अभिभावक अपने लिंग दोषी बच्चों को कलंक मान किन्नरों के हवाले नहीं करेंगे। उन्हें घूरे में नहीं फेंकेंगे। ट्रांसजेंडर के खाते में नहीं धकेलेंगे। यह पहचान जब उन्हें किन्नरों के रूप में जीने नहीं दे रही समाज में तो सरकारी मान्यता मिल जाने के बाद जीने देगी? किन्नरों के रूप में समाज ने उन्हें उस खांचे में सदियों पूर्व ढकेलकर रखा हुआ है। उसी रूप में उन्हें आरक्षित करके सरकार अभिभावकों को अपराध मुक्त कर खुली छूट दे रही है। पैदा होते ही वह लिंग दोषी बच्चों को ट्रांसजेंडर जमात के हवाले कर दें। छुट्टी पा ले अपनी जिम्मेदारी से।"[2] विनोद का उक्त कथन एक तरफ उसके अंदर छिपे आक्रोश को दर्शाता है तो वहीं दूसरी ओर अपनी भाभी सेजल के होने वाले शिशु के प्रति चिंतित रहना उसके सघन पारिवारिक प्रेम का द्योतक है। विनोद को इस बात का सदैव भय सताता है कि कहीं गर्भावस्था में किसी गड़बड़ी के कारण शिशु उसकी तरह किन्नर ना पैदा हो जाए।

विनोद राजनीति के क्षेत्र में भी उतरता है। यहाँ लेखिका चित्रा मुद्गल ने राजनीति के उन पहलुओं को भी उजागर किया है जहाँ एक किन्नर हमारे देश की पॉलीटिकल पार्टी और राजनेताओं के लिए महज एक वोट के अतिरिक्त कुछ नहीं है। विनोद की शिक्षा के प्रति लगन और उसकी कार्यकुशलता देख दिल्ली के एक स्थानीय विधायक उसे अपने यहाँ काम पर रखते हैं और उससे कहते हैं कि वह पंजाब जाकर किन्नरों

के बीच चुनाव प्रचार करें जिससे वे चुनाव जीतकर उन्हें शिक्षा, रोजगार व अन्य क्षेत्रों में आरक्षण दिला सके। विनोद आरक्षण का कतई पक्षधर नहीं है, वह चाहता है कि किन्नरों को भी समाज में स्त्री और पुरुष का दर्जा मिले उन्हें जीरो, अदर्स या थर्ड जेंडर के कॉलम में रखकर मुख्यधारा से अलग ना किया जाए। जब विनोद चुनावी सभा में किन्नरों को संबोधित करता है तो कहता है "आप सब से भी अपील है मेरी। सभा में उपस्थित आप सबसे। स्वयं के अंतर्मन में झांकिए। भीतर दुबके हुए अपने बालपन को याद कीजिए, सुनिए, उसके भीतरके रुदन को।

बरजिए बिरादरी को। शपथ लीजिए यहां से लौटकर आप किसी लिंग दोषी नवजात बच्चे-बच्ची को, किशोर-किशोरी को, युवक-युवती को जबरन उसके माता-पिता से अलग करने का पाप नहीं करेंगे। उससे उसका घर नहीं छीनेंगे। उपहासों के लात-घूसों से उसे जलील होने की व्यवस्था नहीं सौंपेंगे। जलालत का नरक भोग कुछ नहीं सीखे आप ?

नहीं जानते। कौन लोग करते हैं आपका इस्तेमाल ?

वो जो आप को इंसान नहीं समझते। आपके जीने-मरने से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ता। अंधेरे के बावजूद आपकी मैयत को कन्धा देने नहीं पहुंचते। आंसू नहीं बहाते। रूढ़ि नियति की है। जीवित रहते धिक्कार की चप्पलों से वे आपको पीटेंगे। मरणोपरांत वे आपको अपनी ही बिरादरी से पिटवाएंगे। जिनके नवजात शिशुओं को ढूंढ-ढांढ़ नाच-गाने आशीषने पहुंचते हैं आप, उन्हीं के घर दूसरे रोज पहुंचकर देखिए? घर का दरवाजा आपके मुंह पर भेड़ दिया जाएगा।

इस अवमानना को झेलने से इनकार कीजिए। कुली बनिए। मिस्त्री बनिए। ईटा-गारा ढोइये, जो चाहे सो कीजिए, पाएंगे मेहनत के कौर की तृप्ति।"[3]

उपन्यास का एक हिस्सा किन्नरों की बेबसी को भी दिखलाता है, जहाँ विधायक जी के भतीजे बिल्लू व उसके दोस्तों द्वारा विनोद की सहेली पूनम जोशी का निर्ममतापूर्वक बलात्कार किया जाता है और अस्पताल में उसकी मृत्यु हो जाती है। यहाँ पूरे घटनाक्रम को जानते हुए भी किसी में पुलिस या प्रशासन से लोहा लेने की हिम्मत नहीं दिखती, क्योंकि उनके पास धन-बल की कमी है। "उपन्यास की संवेदना के चरम को आत्मसात् करने के लिए आवश्यक है कि उसे अंत से पढ़ा जाए। अंत यानी समाचार दो-जहां मीठी नदी में एक किन्नर की फूली हुई लाश बरामद होती है। जिसे आपसी रंजिश का मामला माना जा रहा है। इस हत्या में 'अंडरवर्ल्ड' की भूमिका की बात कही जा रही है। लाश की पहचान और हत्या के कारण अस्पष्ट दिखाए गए हैंपर पाठक के मन में पूरी तरह स्पष्ट हो उठते हैं कि यह लाश विनोद उर्फ बिन्नी की है। इसे मात्र एक साधारण घटना समझ कर छोड़ा नहीं जा सकता। यही वह मुख्य बिंदु है जहाँ से राजनीति का घृणित स्वरूप उजागर होता है।"[4]

उपन्यास का अंत सुखांत करके दुखांत किया गया है, ताकि कथानक का यथार्थ रूप सबके सम्मुख आ सके। उपन्यास के माध्यम से एक माँ का अपने किन्नर बेटे से घर वापसी की अपील करना माफीनामा और उसे अपनी जायदाद में हिस्सा देना किन्नरों के प्रति एक बड़े सामाजिक बदलाव को इंगित करता है। "एक बड़ा दिलचस्प प्रश्न लेखिका इस उपन्यास के नाम के साथ एवं विनोद की मां के द्वारा लिए गए पोस्ट बॉक्स नं. के माध्यम से भी उठाती हैं। इसके शीर्षक से ऐसा प्रतीत होता है कि किन्नरों के लिए जैसे कोई एक निश्चित ठिकाना ही नहीं है। उनका एक निश्चित पता, घर या परिवार नहीं है, बल्कि उनका कोई है ही नहीं। उनकी जिंदगी एक पोस्ट बॉक्स नं. की तरह है, जिसे देखते तो सब हैं लेकिन अपनाता कोई नहीं है। वह अपने आप में एक पूर्णपता है, लेकिन उसका कोई अता-पता नहीं है।"[5]

उपन्यास का शिल्प भी अपने कथ्य की तरह मजबूत दिखाई पड़ता है। पत्रात्मक शैली में लिखे गए इस उपन्यास में आत्मकथात्मक और पूर्वदीप्ति शैली का भी प्रयोग किया गया है, जिससे उपन्यास की कथा और भी सुसंगठित व सजीव जान पड़ती है। चूंकि, हिंदी में पत्रात्मक शैली में बहुत ही कम उपन्यास लिखे गए हैं इसलिए भी यह उपन्यास शिल्प के धरातल पर नवीन प्रतीत होता है। उपन्यास का शीर्षक 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा' ही इसके शैली की विवेचना करने के लिए पर्याप्त है। पत्रात्मक शैली में लिखे गए इस उपन्यासमें कुल मिलाकर सत्रह पत्र हैं, जिसमें बिन्नी उर्फ विनोद उर्फ बिमली द्वारा ही सभी पत्र लिखे गए हैं। सभी पत्रों की शुरुआत में 'मेरी बा' लिखा होना केवल विनोद द्वारा किए गए एकतरफा पत्र व्यवहार का प्रमाण है। जिसमें विनोद अपनी माँ द्वारा लिखे गए पत्र का उत्तर लिख उन्हें भेजता है। उपन्यास की भाषा में परिनिष्ठित और सभ्य वर्ग की भाषा दिखती है, जिससे विनोद के संस्कार तथा उसकी शिक्षा का परिचय मिलता है। आम किन्नरों की तरह विनोद के पत्र में भाषा के रूप में कहीं भी अशिक्षा का पुट नहीं दिखाई देता। उपन्यास के आरंभ में डिस्क्लेमर के रूप में पात्र एवं घटनाओं को काल्पनिक कहना चित्रा मुद्गल की महज एक औपचारिकता हो सकती है। जबकि अपने कुछेक साक्षात्कार में उन्होंने यह स्वीकार किया है कि इस उपन्यास के कथा सूत्र मुझे मुंबई में अपने नाला सोपारा के प्रवास के दौरान मिले। उपन्यास की कथा गुजराती परिवार से संबद्ध होने के नाते प्रयोग के स्तर पर कथा में कुछ गुजराती शब्द मसलन- दीकरा, बा, मोटा भाई, बारसा, बेन, पगे लागूं आदि प्रमुखता से देखने को मिलते हैं। उपसंहार में समाचार- एक और दो में छपे'टाइम्स ऑफ इंडिया' में विनोद की माँ वंदना बेन का माफ़ीनामा और घर वापसी की अपील के रूप में उपन्यास का अंत लेखिका का अनूठा प्रयोग है। जहाँ पाठक के मन में समाचार-दो में दिए गए किन्नर की लाश के विषय में थोड़ी प्रश्नाकुलता पैदा हो सकती है। वस्तुतःहम कह सकते हैं कि इस उपन्यास में उठाये गए लिंगपूजक समाज, किन्नरों के आरक्षण, घर वापसी जैसे तमाम मुद्दों के बीच एक प्रश्न के रूप में अथवा एक अनसुलझे निष्कर्ष के रूप में उपन्यास का अंत करना भी पाठकों के सामने एक प्रश्न खड़ा करने जैसा है। जो पाठक वर्ग को किन्नरों की सामाजिक स्थिति के विषय में सोचने पर विवश करता है।

संदर्भ ग्रंथ :

1. थर्ड जेंडर : कथा आलोचना, संपा. डॉ. एम. फ़िरोज़. खान, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा अर्थात तीसरी सत्ता की व्यथा-कथा, मधुरेश, पृ.सं. – 93
2. पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, चित्रा मुद्गल, पृ.सं. – 112, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2017
3. वही, पृ.सं.- 186-187
4. थर्ड जेंडर के संघर्ष का यथार्थ, संपा. डॉ. शगुफ़्ता नियाज़, थर्ड जेंडर के जीवन की सामाजिक-राजनैतिक कथा पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा, डॉ.पुष्पा गुप्ता, पृ.सं. - 60
5. सामयिक सरस्वती, संपा-महेश भारद्वाज, विकलांग है असामाजिक या अपशकुन नहीं, प्रदीप कुमार, अंक-अप्रैल-सितंबर 2018, पृ.सं. – 81

(**परिचय :** लेखक ने थर्ड जेंडर पर केंद्रित उपन्यासों पर हालिया अपना शोध-कार्य संपन्न किया है, वर्तमान में सिलीगुड़ी, पश्चिम बंगाल में रहते हैं।)